26-6-2001

अपने ऊँचे स्वमान में रह समस्याओं को खेल समझकर पार करो

आज बापदादा के पास सर्व विशेष टीचर्स प्रति जाना हुआ। जाते ही बापदादा ने पहले तो स्नेह युक्त मिलन मनाया और बांहों का हार हमारे गले में डाल दिया। उसके बाद बोले, बच्ची क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, बाबा आज तो विशेष टीचर्स की भट्ठी आरम्भ हो रही है, उसका समाचार लाई हूँ। ऐसे कहते ही एक सेकण्ड में बाबा ने एक दिव्य दृश्य इमर्ज किया, तो क्या देखा - एक बहुत रॉयल राज-सभा लगी हुई है। जिसमें सब टीचर्स हैं और सारी सभा में गोल ⭕ सर्कल में सफेद लाइट में, सफेद सजावट से सिंहासन लगे हुए हैं और सबके माथे पर ताज चमक रहा था। वह भी सफेद-सफेद था, जो बहुत सुन्दर लग रहा था। उस ताज के बीच में तीन हीरे लगे हुए थे। एक था लाइट ब्ल्यु, दूसरा था हरा और तीसरा था गोल्ड और लाल मिक्स। हीरों के चारों ओर सुनहरे शब्दों में लिखत थी। पहले हल्के ब्ल्यु हीरे के ऊपर लिखत थी मास्टर ब्रह्मा - आसन के पास सर्किल में लिखा था- हिम्मत और दृढ़ता सम्पन्न रूहानी शक्ति द्वारा आत्माओं की रचना निमित्त

बनने वाले मास्टर रचयिता ब्रह्मा। दूसरे हरे हीरे के ऊपर लिखा था - पालनहार मास्टर विष्णु और आस पास लिखा था - पालना के निमित्त बनी हुई आत्माओं प्रति रूहानी लव, निर्माण भाव और रूहानी साथीपन की शुभ भावना द्वारा निर्विघ्न बनने बनाने की पालना कर्ता मास्टर पालनहार विष्णु।

तीसरे हीरे के ऊपर लिखत थी - मास्टर शंकर। चारों ओर लिखत थी - सर्व साथियों और सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं और चारों ओर के वायुमण्डल से ''व्यर्थ और नेगेटिव संस्कार, संकल्प, बोल, कर्म की कमजोरियां समाप्त कर्ता - मास्टर शंकर।''

ऐसे सबके ऊपर ताज बहुत अच्छे चमक रहे थे। मैं तो देख-देख हर्षित हो रही थी और बापदादा को भी देख रही थी। मैं बोली बाबा आज तो भट्ठी का आरम्भ है, तो आज इस दृश्य का क्या रहस्य है? बाबा बोले बच्ची, आज बापदादा बच्चों की ताजपोशी मना रहा था। भट्ठियां, क्लासेज तो बहुत बारी किये हैं, वायदे भी बहुत बार किये हैं लेकिन आज बापदादा निमित्त आत्माओं को जिम्मेवारी का ताज पहनाने की ताजपोशी मना रहे हैं क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि समय बहुत फास्ट जा रहा है। प्रकृति भी अपने कार्य में बहुत उग्र रूप से आगे बढ़ रही है। माया भी नये-नये रूपों से बच्चों को आकर्षित करने के पेपर लेने का पार्ट बजा रही है लेकिन बच्चों में अब स्व प्रति वा सेवा साथियों प्रति, निमित्त बने हुए स्थानों प्रति, चारों ओर के वायुमण्डल प्रति रूहानी परिवर्तन करने की जिम्मेवारी को प्रैक्टिकल लाने में बहुत धीमी गति है। इसलिए अब ब्रह्मा बाप भी, साथ में एडवांस पार्टी भी समय सम्पन्न का बहुत इन्तजार कर रहे हैं। अब नये परिवर्तन का पर्दा बदलने का समय समीप आ रहा है। इस नये पर्दे को खोलने की डोरी इन विशेष आत्माओं के हाथ में है इसलिए बापदादा इस बारी जिम्मेवारी के ताज की ताजपोशी मना रहे हैं। ताजपोशी पर राज्य अधिकारी आत्मा को सर्व के आगे कुछ संकल्प भी लेने होते हैं। तो बापदादा भी सब ताजधारी टीचर्स को यही दिल से दृढ़ संकल्प दिलाने चाहते हैं कि ''अब से दृढ़ता, परिपक्वता से, सम्पन्नता से

स्व परिवर्तन और सर्व परिवर्तन करना ही है। चाहे कोई भी हलचल की समस्या आवे, चारों ओर के सेवास्थान, सेवा साथियों वा स्टूडेन्टस वा सेवा के साधनों द्वारा पेपर आवें लेकिन हम स्वमान में रह समस्याओं को खेल समझ पार करेंगे क्योंकि विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। सफलता हमारे गले का हार है। इस निश्चय के रूहानी नशे से अचल-अडोल बन, निर्मान बन, विश्व निर्माण के ताज की जिम्मेवारी निभानी ही है। स्व के और दूसरों के विघ्न-विनाशक बनना ही है।'' यही आज बापदादा ताजपोशी मनाने चाहते हैं।

उसके बाद फिर बाबा ने टीचर्स को वतन में इमर्ज किया। साथ में दोनों दादियां भी थी और बाबा ने हर एक को बहुत मीठी दृष्टि देते हुए अपने हस्तों से गले में माला डाली, माला भी बहुत वन्डरफुल थी। बाबा बोले, यह है बापदादा की श्रेष्ठ आशाओं के दीपकों की माला। माला तो बड़ी सुन्दर लग रही थी। फिर दोनों दादियों को अपने पास बांहों में समाए बोला अब बोलो, कब बापदादा के आशा की इस दीपमाला को जगायेंगे! उसकी डेट फिक्स करो तो कब यह वन्डर आफ वर्ल्ड की माला की विचित्र दीपमाला मनायेंगे?

दोनों दादियां तो मुस्कराते बाबा की दृष्टि में लवलीन थी। फिर बाबा ने कहा अब देखेंगे - इस भट्ठी में क्या नवीनता करते हो, जो अब तक नहीं हुई है। बोलो बच्ची, ऐसे ही सोचा है ना! ऐसे कहते बापदादा सबको दृष्टि देते रहे, दृष्टि लेते हुए हम मधुबन पहुँच गई।